नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर
स्थापित २००५ ई.
7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक..... दिनांक : 21-09-2019

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में प्राणि विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणि विभाग के आचार्य **प्रो0 रविकान्त उपाध्याय** ने **जैव विकास** विषय पर बोलते हुए कहा कि पृथ्वी पर आज जो हम जीवों के विकसित और विभिन्न प्रकारों को देख रहे है वो अचानक विकसित नही हुए परन्तु **''क्रमिक परिवर्तनों द्वारा धीरे–धीरे विकास''** से हुआ है। उन्होंने जैव विकास के विभिन्न सिद्धान्तों के विषय में बताते हुए लैमार्कवाद, डार्विनवाद, उत्परिवर्तन सिद्धान्त एवं मार्डन सिन्थेटिक थ्योरी पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि लैमार्क ने उपार्जित लक्षणों की वंशागति के सिद्धान्त द्वारा, डार्विन में ''प्राकृतिक चयन'' के सिद्धान्त द्वारा, डी ब्रीज ने उत्परिर्वतन के सिद्धान्त द्वारा तथा मार्डन सिन्थेटिक थ्योरी (नव–डार्विनवाद) ने गुणसूत्रों के द्वारा पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीवों के विकास की परिकल्पना रखी। इन्होने डार्विन के ''प्राकृतिक चयन'' के सिद्धान्त पर बोलते हुए कहा कि प्रत्येक जीवों में सन्तान उत्पन्न करने की प्रचुर व प्राकृतिक क्षमता होती है, अगर सभी जीवों के सन्तान व्यस्क रूप में परिवर्तित हो गये तो, आज पृथ्वी पर खड़े होने की जगह नही बचती चारों तरफ जीव ही जीव दिखाई देते। इन्होंने एक सिंगल जोड़े के नर व मादा हाथी का उदाहरण देते हुए कहा कि यद्यपि इनमें सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता बहुत कम होती है, लेकिन अगर इनके सभी बच्चे व्यस्क रूप में परिवर्तित हो गये तो आने वाले 750 वर्ष में एक नर व मादा हाथी के जोड़े से 19 अरब हाथी पृथ्वी पर हो जायेंगे। अतः इन्होंने बताया कि जो जीव अपने आप को ''प्राकृतिक चयन'' में ढ़ाल लेते है, केवल उन्हीं का विकास होता है तथा जो उसमें अपने आप को नही ढ़ाल पाते वे समाप्त हो जाते है। इन सभी सिद्धान्तों में जैव विकास की वास्तविक परिकल्पना मार्डनसिन्थेटिक थ्योरी में देखने को मिलता है क्योंकि गुणसूत्रों के द्वारा ही लक्षण माता–पिता से उनके बच्चों में पहुँचते है। कार्यक्रम के संयोजक प्राणि विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. रघुवीर नारायण सिंह थे। कार्यक्रम का संचालन श्री विनय कुमार सिंह, प्रवक्ता प्राणि विज्ञान विभाग ने किया। आभार ज्ञापन डॉ. नवनीत कुमार, प्रवक्ता प्राणि विज्ञान ने किया।

इस कार्यक्रम में बी.एस–सी. प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष तथा एम.एस–सी. प्रथम व तृतीय सेमेस्टर के प्राणि विज्ञान के सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी